*International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences*
*Volume – 4 Issue – 1 January-February 2016 (Special Issue)*
*Website: www.woarjournals.org/IJGAES* *ISSN: 2348-0254*

# झुंझुनूं जिले में भूमि उपयोग का स्वरूप

**Dr. Mukesh Kumar Sharma**
Principal,
Bloom College, Chirawa, Jhunjhunu

Abstract: **अध्ययन क्षेत्र झुंझुनूं जिला राजस्थान राज्य के 27$^0$ 38′ से 28$^0$ 36′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 75$^0$ 02′ से 76$^0$ 06′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।**

**1.1 अध्ययन क्षेत्र :** जिले के उत्तर–पश्चिम में चुरू जिला तथा दक्षिण पश्चिम में सीकर जिला तथा उत्तर–पूर्व में हिसार और महेन्द्रगढ़ से घिरा हुआ है। **(मानचित्र 1)**

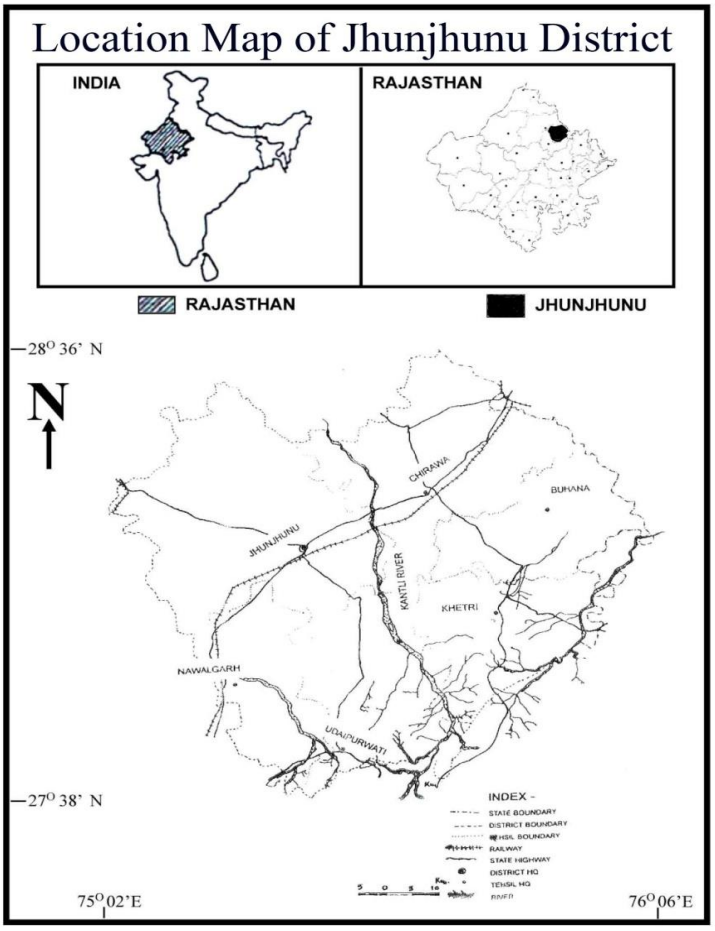


अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्र 5928 वर्ग कि.मी. है समुद्र तल से 338 मीटर की ऊचाई पर स्थित है। जिले को पॉच मुख्य विभाजन तथा छ तहसीलों झुंझुनूं, चिड़ावा, खेतड़ी, बुहाना, नवलगढ़, उदयपुरवाटी तथा 8 पंचायत समितियों में बटा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र झुंझुनूं जिले में 12 नगरपालिकाऐं है।

जिले की कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 21,39,658 है तथा जिले का जनघनत्व 361 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. है, जो 2001 की तुलना में 38 अधिक है। जिले की कुल जनसंख्या राजस्थान की 3.12 प्रतिशत है जिसमें 1,097,390 पुरूष तथा 1,042,268 महिलाऐं है। 2001–2011 के मध्य जिले की जनसंख्या वृद्धि दर 11.81 प्रतिशत रही, जिलें की कुल साक्षरता 2001 में जहां 73.04 प्रतिशत थी वही 2011 में बढ़कर 74.72 प्रतिशत के साथ राजस्थान में तीसरा स्थान प्राप्त है। जिलें की पुरूष साक्षरता 87.88 प्रतिशत जो राज्य में सर्वाधिक पुरूष सारक्षता है, जिला महिला सारक्षरता की दृष्टि से कोटा ओर जयपुर के बाद 61.15 के साथ तीसरा स्थान रखता है। झुंझुनूं जिले में 12 नगर 927 गांव है। राजस्व रिकार्ड के अनुसार जिले के कुल क्षेत्रफल 591536 हैक्टेयर में से वन क्षेत्र (6.70 प्रतिशत), कृषि के लिए अयोग्य (6.34 प्रतिशत), जोत रहित भूमि, पड़त भूमि के अतिरिक्त (7.87 प्रतिशत), पड़त भूमि (7.62 प्रतिशत), वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल दुपज घटाकर (71.47 प्रतिशत) है।

झुंझुनूं जिले का नाम झुंझुनूं नगर से लिया गया है जिसमें खेतड़ी, नवलगढ़, उदयपुरवाटी, बिसाऊ, डुण्डलोद और मण्डावा ठिकानों को सम्मिलित किया गया है जो स्वतंत्रता पूर्व जयपुर राज्य के भाग थे यह क्षेत्र कभी स्वतंत्र राज्य नहीं रहा परन्तु व्यवसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है और यहां के व्यापारी देश–विदेश में बड़े प्रतिष्ठानों के लिए प्रसिद्ध रहे है यहां व्यापारियों के द्वारा निर्मित हवेलियां व मन्दिर आज पर्यटक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण है। जिलें का अधिकांश भाग मैदानी है रेतीलें टीलों की ऊॅचाई लगभग 15–30 मीटर के मध्य है जिलें का सामान्य ढ़लान उत्तर–पूर्व की ओर है।

जिलें का दक्षिण–पश्चिम तथा उत्तर–पूर्वी क्षेत्र चट्टानों के चबुतरों से बना है जो रेत से ढ़का हुआ है। जिले के खेतड़ी व समीपवत्ती क्षेत्रों में तांबे के भण्डार उपलब्ध है जिनका विवरण सिन्धु घाटी सभ्यता से भी प्राचीन है मरूस्थलीय भाग के शेखावाटी क्षेत्र का यह जिला सबसे समृद्ध है। थार का मरूस्थल के मध्य स्थित होने के कारण झुंझुनूं जिलें का तापमान $45^0$–$46^0$ उच्चतम तथा $1^0$ न्यूनतम तक रहता है। सापेक्ष आद्रता 50 से 60 प्रतिशत के बीच पायी जाती है झुंझुनूं जिलें में औसत वार्षिक वर्षा 48.18 से.मी. है झुंझुनूं जिलें में अधिकांशतया 90 प्रतिशत वर्षा जुलाई से सितम्बर के बीच होती है। झुंझुनूं जिलें में 463563 हैक्टेयर कृषि के अन्तर्गत आता है जिसमें पड़त भूमि शामिल है। स्वामित्व के आधार पर जिलें में 165703 जोते है जिनमें से सीमान्त कृषकों की संख्या 32746 (19.76 प्रतिशत) तथा लघु कृषक 47283 (28.54 प्रतिशत) है। अर्द्ध मध्यम कृषक 51218 (30.91 प्रतिशत) तथा मध्यम कृषक 30763 (18.56 प्रतिशत) तथा बड़ें कृषकं 3693 (2.23 प्रतिशत) है तथा फसलों में गेहूं, चना, जौ, बाजरा मुख्य है।

झुंझुनूं जिलें में कुल कृषि क्षेत्र 463563 हैक्टेयर में से 198942 हैक्टेयर सिंचित है जिसमें 28 हैक्टेयर नहरी क्षेत्रों को छोड़कर शेष क्षेत्र कुओं तथा ट्यूबवैल द्वारा सिंचित है। इस प्रकार मुख्यतः भू–जल स्त्रोत से सिंचाई की जाती है। जिलें में 4203 डीजल पम्प सैट तथा 31678 ऊर्जा कृत ट्यूबवैल है। इस प्रकार जिलें का 42.92 प्रतिशत क्षेत्र सिंचित है।

**1.2 परिचय :**

भूमि प्रकृति द्वारा प्रदत अमूल्य संसाधन है। भूमि संसाधन आर्थिक क्रियाओं का आधार है। किसी भी क्षेत्र में भू संसाधन की उपयोगिता से क्षेत्र का आर्थिक भू दृश्य प्रभावित होता है। भू संसाधन की क्षमता, उपजाऊपन, पानी की उपलब्धता एवं अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर कृषि प्रारूप प्रभावित होता है।

भूमि उपयोग से तात्पर्य किसी भू–भाग का मानव द्वारा किसी कार्य के लिए प्रयुक्त किये जाने समेत मानव की विभिन्न सांस्कृतिक क्रियाओं के लिए किया जाता है। भूमि एक सीमित संसाधन है। इसके कुछ भाग में ही कृषि कार्य होता है। भू स्वरूप कृषि प्रारूप को आधार प्रदान करती है।

झुंझुनूं जिले का भूमि उपयोग स्वरूप विभिन्न भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों के अर्न्तसम्बन्धों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण पूर्वी व मध्य भाग में ढाल व पहाड़ी भाग होने के कारण कृषि योग्य भूमि का आभाव है। जबकि उत्तरी–पूर्वी तथा उत्तरी पश्चिमी भाग समतल एवं उपजाऊ होने से वहॉ कृषि कार्य की प्रधानता है।

**1.3 भूमि उपयोग प्रारूप :**

जिले के भूमि उपयोग स्वरूप को आठ भागों में विभाजित किया गया है, जो निम्न प्रकार है

1. कुल भौगालिक क्षेत्रफल (ग्राम पत्रों के अनुसार)।
2. वन
3. कृषि अयोग्य।
4. जोत रहित भूमि पड़त भूमि के अतिरिक्त।
5. पड़त भूमि।
6. वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल (दुपज घटाकर)।
7. एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र।
8. समस्त बोया क्षेत्रफल।

**सारणी 1.1 झुंझुनूं जिले का तहसीलवार भूमि उपयोग, 2011 (हैक्टर)**

| तहसील | कुल भौगालिक क्षेत्रफल (ग्राम पत्रों के अनुसार) | वन | कृषि अयोग्य | जोत रहित भूमि पड़त भूमि के अतिरिक्त | पड़त भूमि | वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल (दुपज घटाकर) | एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र | समस्त बोया क्षेत्रफल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 1. झुंझुनूं | 162242 | 1061 | 7435 | 14873 | 16989 | 121884 | 33448 | 155332 |
| 2. चिड़ावा | 130115 | 115 | 5923 | 10922 | 4403 | 108752 | 90367 | 199119 |
| 3. खेतड़ी | 80650 | 20565 | 9383 | 6299 | 6662 | 37741 | 21214 | 58955 |
| 4. उदयपुरवाटी | 84675 | 14546 | 7459 | 3869 | 9354 | 49447 | 29705 | 79152 |
| 5. नवलगढ़ | 68545 | 2195 | 3762 | 4126 | 4503 | 53959 | 27017 | 80976 |
| 6. बुहाना | 65309 | 1198 | 3547 | 6446 | 3136 | 50982 | 39813 | 90795 |
| **योग / प्रतिशत** | **591536 (100.00)** | **39680 (6.70)** | **37509 (6.34)** | **46535 (7.87)** | **45047 (7.62)** | **422765 (71.47)** | **240564** | **664329** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

**1.4 वन भूमि :**

वन किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है विशेषकर राजस्थान राज्य के लिए वनों का अधिक महत्व है वनों से आच्छादित क्षेत्र में जलवायु पर्यावरण रक्षा एवं मिट्टी की उवर्रक शक्ति पर अनुकूल प्रभाव डालते है। वर्ष 2011 में झुंझुनूं जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 591536 हैक्टेयर में मात्र 39680 हैक्टेयर भू–भाग पर वन पाये जाते है। सर्वाधिक वन क्षेत्र जिले की खेतड़ी तहसील में 20565 हैक्टेयर भू भाग वनों से आच्छादित है, जो जिले के कुल वन प्रतिशत का (51.82 प्रतिशत) भाग है। तत्पश्चात् उदयपुरवाटी (36.65 प्रतिशत) दूसरे तथा नवलगढ़ (5.53 प्रतिशत) तीसरा स्थान रखते है।

**सारणी 1.2 झुंझुनूं जिले में तहसीलवार वन भूमि का वितरण (2011)**

| क्र. सं. | तहसील | वन भूमि (हैक्टेयर में) | कुल वन भूमि का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 1061 | 2.67 |
| 2 | चिड़ावा | 115 | 0.28 |
| 3 | खेतड़ी | 20565 | 51.82 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 14546 | 36.65 |
| 5 | नवलगढ़ | 2195 | 5.53 |
| 6 | बुहाना | 1198 | 3.01 |
| **कुल वन क्षेत्र** | | **39680** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

जिले में सबसे कम वन क्षेत्र चिड़ावा तहसील में (0.28 प्रतिशत) भाग पर वन पाये जाते है। जहां मात्र 115 हैक्टेयर भू भाग ही वनों से आच्छादित है। इसे अनुमान लगाया जा सकता है वनों का अध्ययन क्षेत्र में तीव्र गति से विनाश हुआ है। सारणी 1.2 में वन क्षेत्रों की स्थिति को तहसीलवार स्पष्ट किया गया है। यदि वन क्षेत्रों का संरक्षण नहीं किया गया तो आने वाले समय में भयंकर पर्यावरणीय संकट मानव समुदाय के समक्ष उपस्थित हो सकता है।

**1.5 जोत रहित भूमि (पड़त के अतिरिक्त) :**

इस वर्ग में उस भूमि को शामिल किया गया जो कृषि योग्य है लेकिन कृषि कार्यो में उपयोग में नहीं ली जा रही है। इसमें व्यर्थ पड़ी भूमि, चारागाह, वृक्ष एवं पेड़ों के झुण्डों के अतिरिक्त आने वाला क्षेत्रफल है। झुंझुनूं जिले में इस वर्ग की भूमि गत दशको में विशेष परिर्वतन नहीं हुआ है।

**सारणी 1.3 झुंझुनूं जिले में तहसीलवार जोत रहित भूमि का वितरण (2011)**

| क्र.सं. | तहसील | जोत रहित भूमि (हैक्टेयर में) | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 14873 | 31.96 |
| 2 | चिड़ावा | 10922 | 23.47 |
| 3 | खेतड़ी | 6299 | 13.53 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 3869 | 8.31 |
| 5 | नवलगढ़ | 4126 | 8.86 |
| 6 | बुहाना | 6446 | 13.85 |
| | **कुल** | **46535** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

सारणी 1.3 से स्पष्ट होता है कि इस वर्ग के अन्तर्गत 46535 हैक्टेयर भू भाग आता है जिसमें वर्तमान में कृषि कार्य नहीं हो रहा है। तहसीलवार क्रम देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि झुंझुनूं जिले की जोत रहित भूमि में सर्वाधिक भूमि क्रमशः झुंझुनूं (31.96 प्रतिशत), चिड़ावा (23.47 प्रतिशत), बुहाना (13.85 प्रतिशत), खेतड़ी (13.53 प्रतिशत), नवलगढ़ (8.86 प्रतिशत) तथा उदयपुरवाटी में सबसे कम (8.31 प्रतिशत) भू–भाग आता है।

इस वर्ग की भूमि को सुधार कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है। ताकि अधिक खाद्यानों का उत्पादन किया जा सकें साथ ही इस वर्ग की भूमि पर वृक्षारोपण कर वन क्षेत्रों का विस्तार भी किया जा सकता है। जिससे एक तरफ पर्यावरणीय लाभ प्राप्त होगा तो दूसरी तरफ मानव की आवश्यकता पूर्ति हेतु जलाऊ लकड़ी भी प्राप्त होगी।

**1.6 कृषि अयोग्य भूमि :**

इस वर्ग में उस भूमि को सम्मिलित किया जाता है जो कि जुताई के अयोग्य है, जो भूमि कृषि कार्यो में शामिल नहीं की जा सकती है। इस प्रकार की भूमि को दो भागों बांटा जा सकता है।

1. वह भूमि जो गैर कृषि कार्यो के लिए प्रयुक्त होती है, जैसे सड़क, अधिवास, रेलमार्ग आदि।
2. दूसरे वर्ग में गैर जुताई वाली भूमि पर्वत, पठार आदि का क्षेत्रफल शामिल है।

सारणी 1.4 के अनुसार झुंझुनूं जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 37509 हैक्टेयर भू भाग कृषि अयोग्य भूमि की श्रेणी में आता है। तहसीलवार क्रम में देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि इस वर्ग में सर्वाधिक भू भाग खेतड़ी तहसील में आता है।

इसका मुख्य कारण अधिकांश भाग पर्वतीय रूप में होना है। अकेले खेतड़ी तहसील में जिले की कुल कृषि अयोग्य भूमि का एक चौथाई भाग (25.01 प्रतिशत) पाया जाता है।

**सारणी 1.4 झुंझुनूं जिले में तहसीलवार कृषि अयोग्य भूमि का वितरण (2011)**

| क्र.सं. | तहसील | जोत रहित भूमि (हैक्टेयर में) | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 7435 | 19.82 |
| 2 | चिड़ावा | 5923 | 15.79 |
| 3 | खेतड़ी | 9383 | 25.01 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 7459 | 19.88 |
| 5 | नवलगढ़ | 3762 | 10.02 |
| 6 | बुहाना | 3547 | 9.45 |
| **कुल** | | **37509** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

दूसरे स्थान पर उदयपुरवाटी (19.88 प्रतिशत) तथा झुंझुनूं (19.82 प्रतिशत) के साथ तीसरा स्थान रखता है। जहां पर इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल पाया जाता है। सबसे कम कृषि अयोग्य भूमि जिले की बुहाना तहसील में (9.45 प्रतिशत) पायी जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह भू भाग समतल व मैदानी है।

**1.7 पड़त भूमि :**

प्रस्तुत अध्याय में पड़त भूमि वर्ग में पुरातन पड़त चालू पड़त दोनों ही वर्गो को शामिल किया गया है चालू पड़त में वह भूमि जिस पर पांच वर्षो से कम समय तक लगातार कृषि नहीं की जा रही है और पुरातन पड़त भूमि वह क्षेत्र है जिसमें दस वर्षो से खेती नही की गयी हो।

सारणी 1.5 से ज्ञात होता है कि इस वर्ग में तहसील में सर्वाधिक पड़त भूमि झुंझुनूं तहसील में कुल पड़त भूमि का (37.71 प्रतिशत) भाग आता है तथा सबसे कम बुहाना क्षेत्र में (6.96 प्रतिशत) पायी जाती है।

अतः भू भाग का अधिक से अधिक उपयोग कर कृषि कार्य में लगाया जा सकता है। साथ ही भू भाग के पड़त होने के कारणों का पता लगाकर उनका समाधान किया जाना चाहिए ताकि इस भू भाग पर अधिक से अधिक कृषि फसलों का उत्पादन किया जा सकें व बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यानों की आपूर्ति की जा सकें।

**सारणी 1.5 झुंझुनूं जिले में तहसीलवार पड़त भूमि का वितरण (2011)**

| क्र.सं. | तहसील | पड़त भूमि (हैक्टेयर में) | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 16989 | 37.71 |
| 2 | चिड़ावा | 4403 | 9.77 |
| 3 | खेतड़ी | 6662 | 14.78 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 9354 | 20.76 |
| 5 | नवलगढ़ | 4503 | 9.99 |
| 6 | बुहाना | 3136 | 6.96 |
| **कुल** | | **45047** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

**1.8 वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल (दुपज घटाकर) :**

इस वर्ग में काश्त क्षेत्रफल अर्थात फसलों के अन्तर्गत बोया जाने वाला क्षेत्रफल आता है फसलों के क्षेत्रफल में फल, सब्जियों एवं बागानों का क्षेत्रफल भी शामिल किया जाता है।

सारणी 1.6 से विदित होता है कि अध्ययन क्षेत्र का 422765 हैक्टेयर भू–भाग इस वर्ग के अन्तर्गत आता है। तहसीलवार देखने पर ज्ञात होता है कि इस वर्ग में सर्वाधिक भू–भाग झुंझुनूं तहसील में (28.83 प्रतिशत) प्रथम स्थान पर है तथा चिड़ावा एवं नवलगढ़ (25.72 प्रतिशत), (12.76 प्रतिशत) के साथ दूसरे व तीसरा स्थान रखता है। जिले की खेतड़ी तहसील सबसे कम (8.92 प्रतिशत) के साथ अन्तिम स्थान रखता है।

कमी का कारण इन क्षेत्रों की स्थलाकृति की संरचना, कृषि कार्यो के लिए आधारभूत सुविधाओं का अभाव रहा है अतः जिन तहसीलों में यह क्षेत्रफल कम पाया जाता है वहां पर आधारभूत सुविधाऐं उपलब्ध करवाकर काश्त क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है तथा खाद्यानों का उत्पादन अधिक से अधिक मात्रा में हों सकें तथा बढ़ती जनसंख्या का भरण पोषण हो सकें।

**सारणी 1.6 झुंझुनूं जिले में वास्तविक बोया हुआ क्षेत्रफल (दुपज घटाकर) का वितरण 2011**

| क्र. सं. | तहसील | वास्तविक बोया हुआ क्षे. दुपज घटाकर (हैक्टेयर में) | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 121884 | 28.83 |
| 2 | चिड़ावा | 108752 | 25.72 |
| 3 | खेतड़ी | 37741 | 8.92 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 49447 | 11.69 |
| 5 | नवलगढ़ | 53959 | 12.76 |
| 6 | बुहाना | 50982 | 12.05 |
| **कुल** | | **422765** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

**1.9 एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल :**

इस वर्ग में शुद्व काश्त का वह क्षेत्रफल शामिल किया जाता है झुंझुनूं जिले में इस वर्ग में भू उपयोग में कमी होने का प्रमुख कारण वर्षा की अनियमितता, अनिश्चयता का होना तथा सिंचाई सुविधा का अभाव इत्यादि है अध्ययन क्षेत्र में किसान सरसों की उपज प्राप्त करने के लिए वर्षाकाल में खेत खाली छोड़ देता है और खरीफ काल में उसमें जुताई, बुवाई करता है। इस प्रकार शुष्क कृषि पद्धति के कारण दुपज क्षेत्र का हास हुआ है।

**सारणी 1.7 झुंझुनूं जिले में एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल (2011)**

| क्र. सं. | तहसील | एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 33448 | 13.84 |
| 2 | चिड़ावा | 90367 | 37.40 |
| 3 | खेतड़ी | 21214 | 8.78 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 29705 | 12.29 |
| 5 | नवलगढ़ | 27017 | 11.18 |
| 6 | बुहाना | 39813 | 16.48 |
| **कुल** | | **241564** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

आधुनिक कृषि आदानों के कारण भी अध्ययन क्षेत्र में दुपज क्षेत्र में कमी हुई है, क्योंकि रबी फसलों में से खरीफ फसलों की अपेक्षा अधिक लाभ मिलता है और आधुनिक साधनों से खरीफ काल में अधिक जुताई सम्भव हुई है। इन समस्त कारणें के बावजूद झुंझुनूं जिले में कृषि क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

सारणी 1.7 से तहसीलवार विश्लेषण द्वारा स्पष्ट होता है कि इस वर्ग में जिले का सर्वाधिक भू भाग चिड़ावा तहसील में (37.40 प्रतिशत) तत्पश्चात् झुंझुनूं तहसील (13.84 प्रतिशत) के साथ दूसरे स्थान पर है तथा सबसे कम क्षेत्र खेतड़ी तहसील (8.78 प्रतिशत) के अन्तर्गत आता है।

**1.10 कुल काश्त क्षेत्रफल (समस्त बोया गया क्षेत्रफल) :**

कुल काश्त क्षेत्रफल में शुद्ध काश्त क्षेत्रफल एवं दुपज क्षेत्र को शामिल किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में राजस्थान की अन्य जिलों की तुलना में सर्वाधिक क्षेत्रफल है।

**सारणी 1.8 झुंझुनूं जिले में कुल काश्त क्षेत्रफल (समस्त बोया गया क्षेत्रफल 2011)**

| क्र. सं. | तहसील | कुल काश्त क्षेत्रफल | प्रतिशत में |
|---|---|---|---|
| 1 | झुंझुनूं | 155332 | 23.38 |
| 2 | चिड़ावा | 199119 | 29.97 |
| 3 | खेतड़ी | 58955 | 8.87 |
| 4 | उदयपुरवाटी | 79152 | 11.91 |
| 5 | नवलगढ़ | 80976 | 12.18 |
| 6 | बुहाना | 90795 | 13.66 |
| **कुल** | | **664329** | **100.00 प्रतिशत** |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलेक्टर (भू.अ.), झुंझुनूं

इसका प्रमुख कारण सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता, आधुनिक कृषि सुविधाओं की उपलब्धता और राजस्थान के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा हरियाणा के कृषि में अग्रसर व समृद्ध किसानों से सम्पर्क का होना है।

सारणी 1.8 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र का 664329 हैक्टेयर भू भाग इस क्रम में आता है तथा तहसीलवार देखा जाये तो सम्पूर्ण जिले का सर्वाधिक भाग 199119 हैक्टेयर जो जिले के सम्पूर्ण काश्त क्षेत्र का तहसील में (29.97 प्रतिशत) के साथ चिड़ावा प्रथम स्थान पर है तथा क्रमशः झुंझुनूं तहसील 155332 हैक्टेयर (23.38 प्रतिशत) के साथ दूसरे स्थान पर है। जिले में सबसे कम काश्त क्षेत्र खेतड़ी तहसील के अन्तर्गत 58955 हैक्टेयर (11.91 प्रतिशत) है। खेतड़ी तहसील में सबसे कम काश्त क्षेत्र के होने का मुख्य कारण क्षेत्र का पर्वतीय होना है। भारत का सबसे बड़ा ताम्र उपक्रम हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड भी इसी तहसील में स्थापित है जो पूर्णतया एक पर्वतीय क्षेत्र है।

**References**


- Agro Eco-system Director –Arid (2008) Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur.
- Annual Report (2008) Agriculturl Project Rajasthan, Govt., Jaipur.
- Chouhan T.S. (1987), Agriculture Geography (A study of Rajasthan State).
- District Statistical Abstract (2008) Directorate of Economical and Statistical, Rajasthan, Jaipur.
- Gurjar R.K. et. al. (2001) Environmental Geography Panchshil Prakashan, Jaipur.
- Author, Field Survey Visites.